5. वन के पक्षी

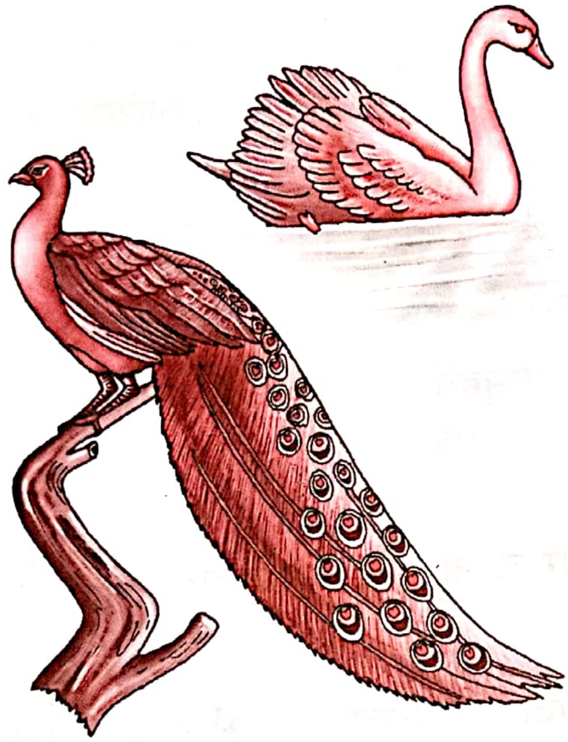

वन में जितने पक्षी हैं,
खंजन, कपोत, चातक, कोकिल।
काक, हंस, शुक, मैना, मोर,
रहते सब आपस में हिलमिल।

सब मिल-जुलकर रहते हैं,
सब मिल-जुलकर खाते हैं।
आसमान ही उनका घर है,
जहाँ चाहते, जाते हैं।

रहते जहाँ, वहीं वे अपनी
दुनिया एक बसाते हैं।
दिनभर करते काम, रात में
पेड़ों पर सो जाते हैं।

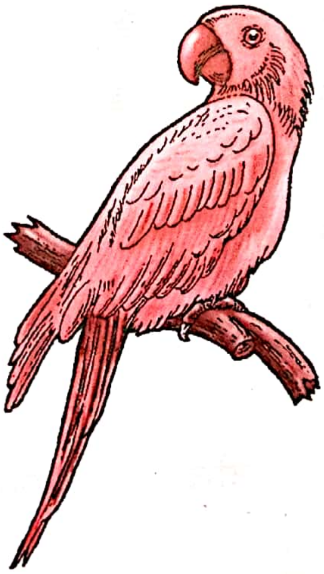

उनके मन में लोभ नहीं है,
पाप नहीं, परवाह नहीं।
जग का सारा माल हड़पकर
जीएँ—ऐसी चाह नहीं!

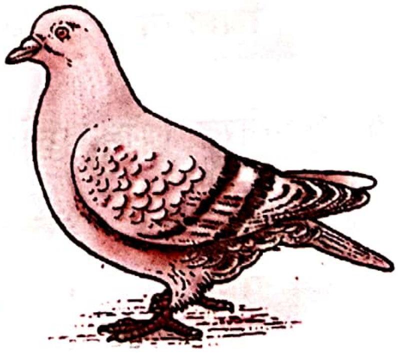

Scanned with CamScanner

जो मिलता है, अपने श्रम से
उतनाभर ले लेते हैं।
बच जाता तो औरों के हित
उसे छोड़ वे देते हैं।

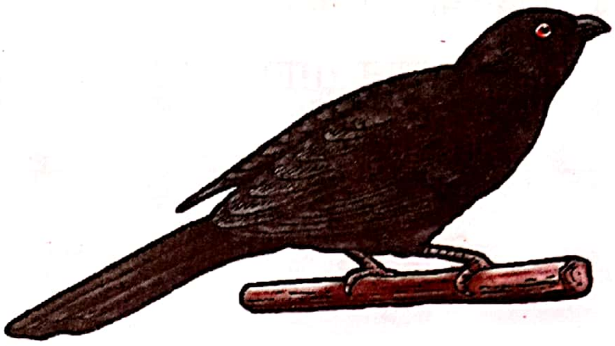

सीमाहीन गगन में उड़ते
निर्भय विचरण करते हैं।
नहीं कमाई से औरों की
अपना घर वे भरते हैं।

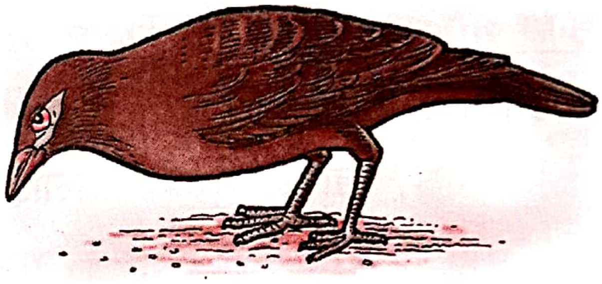

• शब्दार्थ •

कपोत = कबूतर
शुक = सुग्गा, तोता
विचरण करना = घूमना-फिरना
हित = भलाई, लिए
काक = कौआ
कोकिल = कोयल
औरों की = दूसरों की
गगन = आकाश

• पाठ-बोध •

1. इस पाठ में किन-किन पक्षियों के नाम आए हैं?
2. पक्षियों के किन्हीं दो गुणों का वर्णन करो।
3. पक्षी दिनभर क्या करते हैं?

Scanned with CamScanner

4. पंक्तियाँ पूरी करो।

सीमाहीन गगन ....

निर्भय ....

नहीं कमाई से ....

....

• भाषा और व्याकरण •

1. इन नामों को पढ़ो।

लोभ, पाप, बुराई, भलाई

जो नाम किसी व्यक्ति के गुण, स्वभाव या मन के भाव का बोध कराए, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। ऊपर के चारों नाम भाववाचक हैं।

दिए जा रहे खाली स्थान में उपयुक्त भाववाचक संज्ञा भरो।

किसी की .... मत करो।

2. इन समानार्थक शब्दों को याद करो।

आसमान = गगन, आकाश, नभ, व्योम
पक्षी = खग, गगनविहारी, चिड़िया, विहग

3. रेखांकित शब्दों का अर्थ-भेद समझो।

कौआ <u>और</u> तोता उड़ते हैं।

<u>औरों</u> को भी उड़ने दो। (यहाँ 'औरों' का प्रयोग संज्ञा की तरह हुआ है।)

4. श्रुतलेख (सही पढ़ो, सही लिखो।)

श्रम	**परिश्रम**	**निर्जन**	**निर्भय**	**विचरण**	**शरण**

★

Scanned with CamScanner

Inside

प्रश्न 1:- "वन के पक्षी" कविता के प्रथम आठ पंक्तियाँ लिखिए।

वन के पक्षी

वन में जितने पक्षी हैं,
खंजन, कपोत, चातक, कोकिल।
काक, हंस, शुक, मैना, मोर,
रहते सब आपस में हिलमिल

सब मिल-जुलकर रहते हैं,
सब मिल-जुलकर खाते हैं।
आसमान ही उनका घर है;
जहाँ चाहते, जाते हैं।

Scanned with CamScanner

Inside

Date - 11/07/20

② खाली स्थान भरो :—

जो मिलता है, अपने श्रम से
उनाभर ले लेते हैं।
बच जाता तो औरों के हित
उसे छोड़ दे देते हैं।

सीमाहीन गगन में उड़ते
निर्भय विचरण करते हैं।
नहीं कमाई से औरों की
अपना घर वे भरते हैं।

Scanned with CamScanner